पेड़ों के बारे में एक अन्तर्विषयक पाठ

सारिया अली

पर्यावरण अध्ययन : एक परिप्रेक्ष्य

चिन्तनशील लोगों और समाज के रूप में हमने इस विचार को त्यागने में कुछ समय लिया कि बच्चे जब स्कूल आते हैं तो उनका दिमाग़ कोरी स्लेट (tabula rasa)[i] होता है। इस बात को समझते हुए NCF, NEP और NIPUN Bharat[ii] जैसे बहुत से मार्गदर्शक दस्तावेज़ों ने बच्चों को समावेशी तरीक़े से जोड़ने वाले शिक्षण के लिए उनके स्थानीय वातावरण का उल्लेख करने की ज़रूरत पर बल दिया है। शुरुआत हेतु बच्चों का स्थानीय परिवेश हमेशा ही उनके लिए एक सरल सन्दर्भ बिन्दु होता है और फिर वे एक व्यापक मुद्दे या विचार के रूप में उसकी कल्पना कर सकते हैं। इससे बच्चों को एक परिप्रेक्ष्य मिलता है और समझने में आसानी होती है।

हालाँकि, बच्चे अपने चारों तरफ़ के प्राकृतिक पर्यावरण को देखने के अभ्यस्त होते हैं, फिर भी शिक्षा ऐसे उत्प्रेरक की भूमिका निभाती है जिससे वे पर्यावरण के विभिन्न आयामों के महत्त्व के प्रति जागरूक होते हैं और इसके प्रति उनके अन्दर एक संवेदनशीलता विकसित होती है। यहीं से एक विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन (EVS) की भूमिका शुरू होती है। कक्षा-3 से शुरू होने वाले पर्यावरण अध्ययन के विषय का मुख्य उद्देश्य बच्चों को उनके वातावरण की ज़्यादा गहरी समझ हासिल करने में सहायता करना है, जिसमें पर्यावरण के साथ मानव के रिश्तों का ज्ञान और प्राकृतिक तथा मनुष्य निर्मित संसाधनों का ज्ञान शामिल है। कक्षा-4 और 5 में विद्यार्थियों से यह उम्मीद की जाती है कि उन्हें उनके इर्द-गिर्द स्थित प्राकृतिक पर्यावरण के महत्त्व को समझने के साथ ही उनके परिसर के बाहर के पर्यावरण का ज्ञान भी होना चाहिए। इस बाबत उनके साथ सघन रूप से काम करने से उनकी जागरूक होने की, सह-सम्बन्ध स्थापित करने की, विविधता का सम्मान करने की क्षमताओं के बढ़ने की उम्मीद की जाती है। यद्यपि, यह विषय सामाजिक-भावनात्मक कौशल के विकास के साथ-साथ व्यवहार और भाषा सीखने की विस्तृत गुंजाइश से भरा हुआ है लेकिन फिर भी प्रायः स्कूलों में इसे बहुत सीमित दृष्टिकोण से पढ़ाया जाता है। दूसरे विषयों की तरह ही इसमें भी पाठ्यक्रम पूरा करना ही अन्तिम लक्ष्य होता है जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है।

जब मैं बाड़मेर, राजस्थान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट थी तो उन दिनों मैं वहाँ के सरकारी प्राथमिक स्कूल में कक्षा-4 और कक्षा-5 में पढ़ाती थी। वहाँ मेरे शिक्षण का मुख्य क्षेत्र अँग्रेज़ी और बच्चों की आत्म अभिव्यक्ति में था। इस गुंजाइश को बढ़ाते हुए, मैंने इस तरह से काम करने का प्रयास किया कि एक पाठ योजना के रूप में भाषा सीखने और पर्यावरणीय चेतना के अन्तर्विषयक सत्र को बच्चों के साथ क्रियान्वित किया जा सके। यह लेख कक्षा में इस पाठ की योजना, क्रियान्वयन और अनुभव को साझा करता है।

सन्दर्भ

बाड़मेर ज़िला भारत के एकदम पश्चिम में स्थित है। और इसका भूक्षेत्र सघन रेगिस्तान है। यहाँ पेड़ों का काफ़ी सम्मान किया जाता है क्योंकि वे छाया प्रदान करते हैं और इस क्षेत्र में रहने वालों को बहुत तरह के संसाधन प्रदान करते हैं। यहाँ रहने वालों के अस्तित्व के लिए अनुकूल प्राकृतिक संसाधन बहुत सीमित हैं।

मेरी पाठ योजना मुख्यतः 'पेड़ों' पर केन्द्रित थी और उसका उद्देश्य था कि पेड़ों के बारे में एक संवाद शुरू किया जाए और हमारे जीवन में उसकी प्रासंगिकता पर चर्चा की जाए। इरादा जागरूकता पैदा करने का भी था ताकि बच्चे पेड़ों के साथ संवेदनशीलता के साथ पेश आएँ और उन्हें बचाने के बारे में होने वाले वार्तालापों में शामिल हों। मैंने इस योजना को बच्चों के सामने तब रखा जब वे अन्ततः कक्षा में मेरी गतिविधि आधारित सीखने की विधियों के आदी होने लगे थे। भाषा की कक्षा में मैंने दिए गए की-वर्ड के साथ अँग्रेज़ी के वाक्य बनाने पर काम शुरू कर दिया था। ऐसी स्थिति में, गतिविधियों सहित इस योजना का ख़ाका खींचने के दौरान पर्यावरण अध्ययन और अँग्रेज़ी, दोनों के सीखने के परिणामों को ध्यान में रखा गया था। बच्चे इससे ज़्यादा जुड़ सकें इसके लिए हमने निर्णय लिया कि हम कक्षा को एक पेड़ के नीचे चलाएँगे। स्कूल में नीम के बहुत से बड़े-बड़े पेड़ थे और बच्चे रोज़ाना ख़ुशी-ख़ुशी उन्हें पानी देते थे और उनका ध्यान रखते थे। लेकिन बाड़मेर की भीषण गर्मी के कारण हम इस सत्र के लिए कक्षा से बाहर नहीं निकल पाए।

योजना का क्रियान्वयन

चूँकि यह अन्तर्विषयक सत्र का यह मेरा पहला प्रयास था, अतः पेड़ों पर आधारित इस सत्र का ख़ाका दो दिन के लिए तैयार किया गया जिसमें बहुत तरह की गतिविधियाँ और बहुत तरह से सीखना शामिल था।

पहला दिन : पेड़ों के बारे में बातचीत

एक शिक्षिका के रूप में मेरी सबसे बड़ी सीख यह रही कि आप कक्षा में जितनी ज़्यादा 'बातचीत' करेंगे उतना अच्छा होगा। इससे न सिर्फ़ बच्चों को अपने सोच-विचार को अभिव्यक्त करने की पर्याप्त गुंजाइश मिलती है बल्कि यह उन्हें किसी विषय के साथ इस तरह से जुड़ने का मौक़ा भी देता है कि वे उस विषय के बारे में उनके पास मौजूद ज्ञान के अधिकार को पहचान सकें। अतः हमने पेड़ों पर बातचीत इस तरह से शुरू की कि हम यह समझ सकें कि बच्चे पेड़ों को अपने रोज़ाना के जीवन के हिस्से के रूप में कैसे देखते हैं। बच्चों से निम्न सवाल पूछे गए —

How many of you have trees in or near your house?

(तुममें से कितनों के घरों में या घरों के आस-पास पेड़ हैं?)

उत्तर में ज़्यादातर बच्चों ने कहा कि उनके घरों में और आस-पास पेड़ हैं।

Which trees are these?

(कौन-कौन से पेड़ हैं?)

उत्तर : Neem, Rohida or Khejri (नीम, रोहिदा या खेजरी)

(ये पेड़ आमतौर से बाड़मेर में पाए जाते हैं)।

चित्र-1 : पेड़ के नीचे मछली।

Why do we need trees?

(हमें पेड़ों की ज़रूरत क्यों है?)

उत्तर : Trees give us shade, oxygen, fuelwood, and medicines; we can play under them.

(पेड़ हमें छाया, ऑक्सीजन, जलावन और औषधि देते हैं। हम इसके नीचे खेल सकते हैं।)

इस छोटी-सी गतिविधि ने सन्दर्भ निर्मित करने में और इस बात को चिन्हित करने में मदद की, कि बच्चे उस अर्थ में पेड़ों के अस्तित्व को पहचानते हैं जो उनके आस-पास के जीवन से गहराई से जुड़ा होता है।

चित्रों को पढ़ना

चित्रों के साथ पढ़ना और बात करना बच्चों के साथ जुड़ने का एक और रचनात्मक माध्यम है। यह उनकी कल्पना को गढ़ता है, न सिर्फ़ व्याख्या करने की उनकी क्षमता को बढ़ाने के लिए बल्कि इस तथ्य को भी दर्शाने के लिए भी कि कला

चित्र-2 : चिपको आन्दोलन।

असीम होती है।

प्रारम्भिक बातचीत के बाद हमने इस सत्र को आगे बढ़ाया और के. के. बेनिगनी की क़िताब *अ ट्री* पढ़ी। यह चित्रों वाली क़िताब है जिसमें गद्य के रूप में प्रत्येक पन्ने पर सिर्फ़ एक पंक्ति है। बच्चों के साथ विस्तार से चित्रों को पढ़ा गया जिसके दौरान पेड़ों के अमूर्त चित्रों की व्याख्या बच्चों ने साथ मिलकर की। यह ख़ासतौर पर एक रोचक गतिविधि थी क्योंकि उन्हें

एक चित्र तक सीमित ड्रॉइंग की अच्छी समझ थी, मसलन, एक झण्डा, तितली, मछली, फूल आदि। इस क़िताब ने उनके सामने नई चीज़ें रखीं। यहाँ कुछ रोचक संवाद भी उभर कर सामने आए, जैसे एक पेड़ का चित्र जिसके नीचे कुछ मछलियाँ थीं। इस चित्र ने बच्चों को पशोपेश में डाल दिया। इसे समझने के प्रयास के दौरान हम इस व्याख्या पर पहुँचे कि पानी के संरक्षण में पेड़ों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है और इसीलिए मछली ज़िन्दा रह पाती हैं।

आगे पढ़ते हुए क़िताब में *चिपको आन्दोलन* का एक संक्षिप्त परिचय था। बच्चों को इस आन्दोलन, इसके इतिहास और इसकी प्रासंगिकता के बारे में बताया गया।

सीखी हुई बातों को शब्दों में व्यक्त करना

हम पहले से ही बच्चों की ख़ुद से लिखने की क्षमता पर काम कर रहे थे ताकि वे महज कहीं से देखकर ही न लिखते रहें। बच्चों से यह कहा गया कि उन्होंने उस दिन कक्षा में पेड़ों के बारे में जो भी सीखा है उसे लिख डालें। यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि बच्चों ने किस तरह से लिखने का प्रयास किया। टूटी-फूटी हिन्दी में भी उन्होंने चार-पाँच वाक्य लिखे कि पेड़ क्यों महत्त्वपूर्ण हैं और क्यों उन्हें अनावश्यक रूप से नहीं काटा जाना चाहिए।

दूसरा दिन : आओ चित्रकारी करें

बातचीत करने और चित्रों को पढ़ने के साथ ही चित्रकारी एक और ऐसी रचनात्मक गतिविधि है जो बच्चों को अपने आपको खुलकर अभिव्यक्त करने का मौक़ा देती है। सत्र को आगे बढ़ाते हुए अगले दिन बच्चों को कोरे काग़ज़ और रंग दिए गए और उन्हें अँगूठे की छाप से पेड़ का चित्र बनाने के लिए कहा गया।

चित्र-3 : बच्चों द्वारा अँगूठे की छाप से की गई चित्रकारी।

इसके बाद उनके द्वारा लिखे गए वाक्यों को पुनः पढ़ा गया और उनमें आए अँग्रेज़ी के की-वर्ड जैसे fruits, vegetables, fire-wood आदि को ब्लैकबोर्ड पर लिखा गया। अन्त में बच्चों से कहा गया कि वे इन की-वर्ड से वाक्य बनाकर अपने चित्रों के पीछे लिखें। उनके द्वारा बनाए वाक्यों के कुछ उदाहरण हैं — trees give us fruits like mango, banana and apple; trees provide us with firewood to light our earthen stoves; trees give us shade; we get vegetables from trees.

(पेड़ हमें आम, केला, सेब जैसे फल देते हैं, पेड़ हमें चूल्हा जलाने के लिए जलावन देते हैं, पेड़ हमें छाया देते हैं, पेड़ हमें सब्ज़ियाँ देते हैं।) यहीं पर हमने उस दिन का अपना काम ख़त्म किया।

चित्र-4 : पेड़ बना एक बच्चा।

इस सीखने को आगे बढ़ाते हुए एक सप्ताह के बाद कक्षा में एक नाटक खेला गया जिसमें आम का पेड़ और चिड़ियों के किरदार भी शामिल थे। इसी नाटक में कक्षा में एक बच्चे ने अपने आपको पेड़ के रूप में प्रस्तुत किया। यह उस पाठ योजना की एक अतिरिक्त गतिविधि थी जिसे एक हफ़्ते बाद किया गया और इससे विषय पर संवाद की निरन्तरता बनाने में मदद मिली।

सम्पूर्णता में कहें तो यह उन गतिविधियों का एक विस्तृत समूह था जिन्हें पर्यावरण जागरूकता पर शुरुआती सत्र के रूप में किया गया। मैंने यह महसूस किया कि एक अकेले विषय के लिए विविध गतिविधियों को शामिल करना पाठ को रुचिकर बनाता है और इन गतिविधियों में बच्चों ने पूरे उत्साह से भाग लिया। इसके अलावा वे जो जानते और समझते थे उस पर चर्चा करने के लिए हर क़दम पर उन्हें मौक़ा दिया गया। इससे संवाद प्रासंगिक बना रहा। साथ ही इस योजना ने भाषा और पर्यावरण अध्ययन, दोनों के सीखने के परिणामों पर काम किया। इस एक सत्र से मुझे यह एहसास हुआ कि पर्यावरण अध्ययन को रचनात्मक योजना के साथ सीखने के लिए वास्तव में बहुत मज़ेदार बनाया जा सकता है। अगर कोविड-19 की दूसरी लहर न आई होती और उसके परिणाम स्वरूप स्कूल न बन्द हुए होते तो मैं इस योजना को और आगे ले जाती और उसमें ऐसी और गतिविधियों को जोड़ती जो पेड़ों के विवरणों और उन्हें संरक्षित करने के तरीक़ों से सम्बन्धित होतीं। पानी, प्रदूषण जैसे विषयों को लिया जा सकता था और बच्चों के साथ इन सबका एक मज़बूत नाता बनाया जा सकता था। यह अनुभव हमें इस बात के बहुत से सुबूत देता है कि प्राथमिक शिक्षा में काम करने वाले हम सभी लोगों को पर्यावरण अध्ययन जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर इस तरह काम करते हुए योजना बनानी चाहिए कि प्रकृति के महत्त्व के प्रति बच्चों की संवेदना, रचनात्मकता और समझ उद्वेलित हो सके।

Endnotes

i *Tabula rasa* is a Latin phrase often translated as 'clean slate' in English. It is the theory that individuals are born without built-in mental content, and therefore, all knowledge comes from experience or perception.

ii NCF – National Curriculum Framework
NEP – National Education Policy 2020
NIPUN Bharat – National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy

सारिया अली बाड़मेर, राजस्थान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए (विकास) और दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा हाउस कॉलेज से दर्शनशास्त्र में बीए किया है। वे साक्षरता से आगे जाकर सीखने और शिक्षा के विचार में मज़बूती से विश्वास रखती हैं जिसका उद्देश्य होना चाहिए कि बच्चे ऐसे व्यक्ति बन सकें जो स्वतंत्र रूप से सोच सकें। उनसे sariya.ali@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अमिता शीरीं **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय